© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

शिशुपालवधम् में नदी एवं पर्वत

मोनिका यादव
(जे0आर0एफ0)
शोधच्छात्रा
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भूमिका–

प्रतिभा के धनी महाकवि माघ अपने शिशुपाल वध में ऐसी साहित्यिक घटा का समावेश किया है जिसमें उनके कवि प्रतिभा के साथ ही पाण्डित्य का भी अद्भुत चमत्कार स्पष्ट रूप से हमें दिखाई देता है। संस्कृत भाषा में निबद्ध महाकाव्यों में शिशुपालवध की ख्याति इतनी अधिक है कि वह महनीय वृहत्काव्यों में (वृहत्रयी में) अन्यतम माना जाता है। एकमात्र कृति होने पर भी यह उनकी प्रतिभा तथा कवि–कौशल के प्रदर्शन में नितान्त समर्थ है। यदि महाकवि पाण्डित्य का निर्धारण इनके ग्रन्थ के आधार पर किया जाये तो उनका पाण्डित्य सर्वगामी प्रेरणा होता है। माघ वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक अभिशिष्ट पाण्डित्य उनके काव्य को पण्डित जनों के मनोविनोद का एक अद्भुत साधन बनाये हुए है। इन्होंने शिशुपालवध के 14वें सर्ग में यज्ञ का इतना सुन्दर विस्तृत वर्णन किया है जिसका अध्ययन करने के पश्चात् ऐसी प्रतीत होता है कि जैसे इन्होंने किसी विशाल यज्ञ को स्वयं अपनी आँखों से देखा हो। दर्शन में सांख्य तथा योग, बौद्ध तथा मीमांसा के मूल तत्वों की अवतारणा उपमा तथा तुलना के प्रसंग में बड़े ही कौशल से की है। विशाल वैभव के साथ उन्होंने संगीत प्रेम का गूढबेधन भी सर्वोत्कृष्ट रूप में वर्णित किया है। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हो जाता है कि माघ को संगीतशास्त्र का भी विशिष्ट ज्ञान था।

माघ का भाषा एवं भाव, रस एवं अलंकार, प्रकृति–चित्र एवं चरित्र चित्रण का वर्णन भी अनेक दृष्टियों से उकृष्टा का स्वरूप धारण किये हुए है। माघ के शिशुपालवध में उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य इन तीनों सुन्दर गुणों का सन्निवेश हमें प्राप्त होता है। कालिदास, भारवि तथा दण्डी से कतिपय न्यून नहीं प्रतीत होता। माघ के द्वारा ललित पदों का विन्यास तो निःसंदेह मनोहारी तो है ही और साथ ही माघ की पदयोजना इतनी

उत्कृष्ट कोटि की है कि कोई विद्वान किसी पद को अपने स्थान से न तो हटा सकता है और न ही उनमें विपर्यय कर सकता है।

इस पदाललित्य की उत्कृष्टता को देखते हुए विद्वानों ने ''नवर्सगगते माघे नवशब्दों न विद्यते'' इस उक्ति को माघ के पाण्डित्य में चरितार्थ ही कर दिया है। इसी प्रकार से रैवतक पर्वत के वर्णन में उद्भावित नई कल्पना माघ के घण्टामाघ के विरूद का कारण बनती है। पर्वत की हाथी तथा उसके दोनों और लटकने वाले सूर्य तथा चन्द्र की घण्टा में तुलना आलोकित विद्वानों को इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने घण्टामाघ कहना प्रारम्भ कर दिया।

इसी प्रकार से पर्वतों, नदियों आदि का वर्णन शिशुपालवध में प्रत्येक स्थानों पर हमें प्राप्त होता है– शिशुपालवध में महाकवि माघ ने नारदमुनि की तुलना हिमालय पर्वत से करते हुए कहते हैं कि नारद मुनि कमल की केसर के समान भूरे रंग की जटा को धारण किये हुए शरद ऋतु के चन्द्रमा की किरणों के समान गौर वर्ण के बर्फीले स्थानों पर उगी हुई और पुरानी हो जाने के कारण पीली लताओं के गुल्मों से धारण करने वाले हिमालय पर्वत के समान प्रतीत हो रहे थे–

दधानमम्भोरूहकेसरद्युतीर्जटाः शरच्चन्द्रमरीचिरोचिषम्।

विपाकपिंगास्तुहिनस्थलीरूहो धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव।।1/5

माघ ने रैवतक पर्वत का वर्णन तो शिशुपालवधम् में पग–पग पर ही किया है– सर्वप्रथम उन्होंने श्रीकृष्ण द्वारा दृष्टिगत रैवतक पर्वत की शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि– इन्द्रनील मणि के विविध रूपों से युक्त रैवतक पर्वत की भूमि मानों उन मणियों की कान्ति के साथ भूमि को विदारित कर ऊपर उठती हुई सर्पों के निःश्वास की धूम राशि ही हो–

निःश्वासधूमं सह रत्नाभिर्भित्त्वोस्थितं भूमिमिवोरगाणाम्।

नीलोपलस्यूतविचित्र धातुमसौ गिरिं रैवतकं ददर्श।। 4/11।।

और कहते हैं कि बड़ी–बड़ी चट्टानों के ऊपर छाये हुए मेघों के वितानों से घिरा हुआ रैवतक पर्वत सूर्य की किरणों का अवरोधन विन्ध्याचल के पर्वत के समान कर रहा हो। उन नूतन–2 किरणों के जालों से युक्त मणियों की सुवर्णमयी चोटी तक जो कान्ति प्राप्त थी मानो वह इन्द्रनील मणि के सदृश भ्रमरों को आमन्त्रित कर रही हो–

गुर्वीरजस्त्रं दृषदः समान्तादुपर्युर्यम्बुमुचां बितानैः।

विन्ध्यायमानं दिवस्य भर्तुमार्ग पुना रोद्धमिवोन्नमद्भिः।।4/2।।

रैवतक पर्वत की चोटियों पर स्थित सूर्य कान्त मणियों में जब सूर्य का प्रकाश अवतरित होता था तो वह सूर्य का प्रकाश अन्य स्थलों की अपेक्षा अधिक चमकीला हो जाता था–

फलद्भिरूष्णांशुकराभिमर्शात्करामिमर्शात्कार्शानवं धाम पतंगकान्तैः।

शशंस मः पात्र गुणाद्गुणानां संक्रान्तिमाक्रान्तगुणातिरेकाम्।।4/16।।

विस्तृत उर्ध्वगामी रज्जु के समान किरणों वाले सूर्य के उदित होने एवं चन्द्रमा के अस्त होने पर यह रैवतक गिरि विशेष रूप से नीचे लटकते हुए दोनों ओर दो घण्टों से वेष्टित गजराज की शोभा धारण किये हुए है–

उदयति विततोर्ध्वरश्मिज्जावहिमरूचौहिमधाम्नि याति चारतम्।

वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम्।।4/20।।

और नूनत कान्ति से शोभायान जो रैवतक गिरि दुर्वायुक्त सुवर्णमयी भूमि को चारों ओर से धारण किये हुए है, वह हरताल के समान नूतन पीतवस्त्र धारण करने वाले श्रीमान् की भाँति सुशोभित हो रहा है–

बहति यः परितः कनकस्थलीः सहरिता लसमाननवांशुकः।

अचल एष भवानिव राजते स हरितालसमाननवांशुकः।।4/21।।

उस रैवतक पर्वत की चोटियाँ इतनी ऊँची हैं कि उस पर निवास करने वाले लोग निष्कलंक एवं सघन किरणों के जाल से युक्त, स्त्रियों के मनोहर मुख की अविकल समानता प्राप्त करने वाले, गोद में हिरण्य के चिन्ह से सुशोभित चन्द्रमा के पृष्ठ भाग को देखते हैं–

पाश्चात्यभागमिह सानुषु संनिषण्णाः

पश्यन्ति शान्तमलसान्द्रतरांशुजालम्।

संपूर्णलब्धललनालपोन पमान–

मुत्संगसंगिहरिणस्य मृगांकमूर्तेः।।4/22।।

इस रैवतर्क पर्वत पर झरनों के प्रवाह पुरूषों की भाँति ऊँचे तटविहीन शिखरों से बड़ी–बड़ी शिलाओं के ऊपर गिरकर जर्जरित हो जाते हैं और इस प्रकार ऊपर की ओर उछलते हैं जैसे कामार्त्त आकाशगामी अप्सराओं के अंगों की शान्ति करते हैं–

कृत्वा पुवंत्पातमुच्चैर्भगुभ्यो मूर्ध्नि ग्राव्णां जर्जरा निर्झरौघाः।

कुर्वन्ति द्यामुत्पतन्तः स्मरार्तस्वर्लोकस्त्रीगात्रनिर्वाणमत्र।।4/23।।

क्योंकि वानप्रस्थ आश्रम में ऊँचे शिखर से शिला पर कूद कर प्राण त्यागने वाले वृद्ध पुरूष भी आकाश में कामुक अप्सराओं के साथ विहार करते हैं।

रैवतक पर्वत की विशालता का वर्णन करते हुए महाकवि माघ कहते हैं कि– इस रैवतक पर्वत की कुछ भूमि पर चातकों के आर्त स्वर को शान्त करने वाले तथा बिजली के प्रकाश के समान सुवर्ण को चमकाने वाले मेघ छाये हुए हैं, तथा कुछ भूमि पर स्वर्ण को अतिशय चमकीला बनाने वाली सूर्य की ये किरणें पीले वर्ण की धूप चमका रही हैं–

स्थगयन्त्यमूः शमितचातकार्त्तस्वरा

जलदास्तडितुलित्तकान्तकार्त्तस्वराः

जगतीरिह स्फुटितचारूचामीकराः

सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामी कराः।।4/24।।

और ऊपर की ओर फैली हुई चन्द्रमा के हाथ रूपी किरणों से अवलम्बित एवं नक्षत्र मण्डलों की टेक से युक्त शिखरों से अत्यन्त यत्नपूर्वक ऊपर की ओर धारण किया गया आकाश मण्डल ही (नीले रंग की) समानता के कारण विश्वसनीय झरनों के जल से निस्सृत होने से मानो रैवतक पर्वत के चारों ओर स्पष्ट रूप से गिर रहा है–

उत्क्षिप्रमुच्छ्रितसितांशुकरावलम्बै–

रत्तम्भितोडुभिरतीवतरां शिरोभिः।

श्रद्धेयनिर्झरजलव्यपदेशमस्य

विष्वक्तटेषु पतति स्फुटमन्तरीक्षम्।।4/25।।

इस रैवतक गिरि में गाढ़ी पुती हुई चुने की सफेदी के समान रंग वाली, सुवर्ण की रेखाओं से सुशोभित ऊँची रजतमयी दीवार विभूति से श्वेत अंगों वाले भगवान शंकर के अग्नि की ज्वाला से समन्वित तीसरे नेत्र से विभूषित ललाट की शोभा को धारण कर रही है।

इसके अतिरिक्त माघ ने शिशुपालवधम् में मन्दराचल, कैलाश, उदयाचल, विन्ध्य, त्रिकूट, गोवर्धन आदि पर्वतों का भी वर्णन विस्तृत रूप से किया है तथा कृष्ण के अन्दर समाहित त्रैलोक्य की पुष्टि माघ करते हैं तो

उससे यह पता चलता है कि पर्वतों की उस काल में कितनी महत्ता थी, उन पर महोत्सव का आयोजन भी किया जाता था जिसमें भोजन कराने का भी विधान था–

किमिवात्र चित्रमयमन्नमचलमहकल्पितं यदि।

प्राश निखिलमखिलेऽपि जगत्युदरं गते बहुभुजोऽस्थ न व्यथा।15/29।।

महाकवि माघ नदियों की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार मुनियों द्वारा रचित स्मृति ग्रन्थों की अन्तिम परिणति वेदों में ही होती है ठीक उसी प्रकार मेघों ने भी समुद्र से ही जल लेकर वृष्टि द्वारा जिन नदियों की रचना की है, वे भी अन्त में उसी समुद्र में विलीन हो जाती है–

उद्धृत्य मेघैस्तत एवं तोयमर्थं मुनीन्द्रैरवि संप्रणीताः।

आलोकयामास हरिः पतन्तीर्नदीः स्मृतीर्वेदमिवाम्बुराशि।।3/75।।

शिशुपाल के मनमाना व्यवहार की तुलना नदियों से करते हैं तो उससे वर्षाकालीन नदियों के तीव्र–प्रवाह का पता चलता है–

नयति द्रुतमुद्धतिश्रितः प्रसभं भंगमभंगरोदयः।

गमयत्यवनीतलस्फुरद्भुजशाखं भ्रशमन्यमुन्नतिम्।।16/72।।

शिशुपालवध में नदियों में यमुना नदी का विस्तृत वर्णन तो नहीं प्राप्त होता किन्तु उसका संक्षिप्त वर्णन यमुना नदी की मनोहारता का भाव अपने अन्दर समेट रखा हो। यमुना ऊष्ण रश्मि सूर्य की पुत्री शीतल, यमराज की बहन सबकी प्राणभूत तथा कृष्ण वर्ण वाली होती हुई थी शुद्धि को अधिक करने वाले जनों के पापों को नष्ट करने में समर्थ है यदि शास्त्रों या अनुदान की प्रबलता की दृष्टि से देखा जाय तो यह पता चलता है कि उस यमुना ने ही समुद्र को पूर्ण किया न कि गंगा ने–

या धर्मभानोस्तनयापि शीतलैः स्वसा यमस्यापि जनस्य जीवनैः।

कृष्णपि शुद्वेरधिकं विधातृभिविर्हन्तुमंहांसि जलैः पटीयसीः।।12/67।।

उपसंहार–

इस प्रकार से माघ की वैविध्यपूर्ण प्रकृति वर्णन की चातरी उत्कृष्ट स्वरूप को धारण किये हुए वर्तमान पाठक को दृष्टि में एक सुन्दर नायिका एवं नृत्यांगना के रूप में सर्वदा शाश्वत रूप में उपस्थित रहती है। जिसे पाठक भूला पाने में असमर्थ हो जाता है। माघ का उत्कृष्ट एवं जीवन्त प्रकृति विवचेन स्वाभाविक रूप से ही साधारण मनुष्य के मन को भी इस प्रकार आकर्षित करने में समर्थ है।